1. **भारत का व्यापार घाटा**: हाल ही में, भारत के व्यापार प्रदर्शन में उल्लेखनीय सुधार देखने को मिला क्योंकि मई 2025 में कुल व्यापार घाटा घटकर **$6.6 बिलियन** रह गया, जो पिछले वर्ष की समान अवधि की तुलना में **30% की तीव्र गिरावट** को दर्शाता है।
   - यह गिरावट कच्चे तेल की आयात लागत में कमी और सेवा निर्यात में तेज़ वृद्धि के कारण आई, जैसा कि वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय के आंकड़ों से पता चलता है।
   - **व्यापार घाटा क्या होता है**: जब किसी देश का वस्तुओं और सेवाओं का कुल आयात उसके कुल निर्यात से अधिक हो जाता है, तो उसे व्यापार घाटा कहा जाता है। यह एक नकारात्मक व्यापार संतुलन को दर्शाता है, जो यह इंगित करता है कि देश जितना बेच रहा है उससे अधिक खरीद रहा है।
     - इसमें **वस्तुएँ** (जैसे मशीनरी, तेल आदि) और **सेवाएँ** (जैसे पर्यटन, आईटी सेवाएं, बैंकिंग आदि) दोनों शामिल होती हैं, जिससे यह बाहरी व्यापार असंतुलन का एक व्यापक मापदंड बनता है।
     - **सूत्र**: व्यापार घाटा = कुल आयात – कुल निर्यात (यदि परिणाम धनात्मक है, तो व्यापार घाटा; यदि ऋणात्मक है, तो व्यापार अधिशेष)
   - **प्रमुख बिंदु**: मई 2025 में कुल निर्यात बढ़कर **$71.1 बिलियन** हो गया, जो मई 2024 में **$69.2 बिलियन** था, जो **2.8% की वार्षिक वृद्धि** को दर्शाता है।
     - भारत का कुल **माल आयात 1.7% घट गया**, जो कच्चे तेल की कीमतों में कमी का परिणाम है।
     - **सेवा क्षेत्र का आयात** भी **1.5% बढ़ा**, जो सीमा-पार सेवाओं की स्थिर मांग को दर्शाता है।

2. **पोर्टुलाका भारत**: हाल ही में वैज्ञानिकों ने अरावली की पहाड़ियों (जयपुर के पास) के पथरीले क्षेत्रों में Portulaca bharat नामक फूलों वाले पौधे की एक नई प्रजाति की खोज की है।

   - **Portulaca bharat के बारे में**: **आवास**: यह अरावली पर्वत श्रृंखला की शुष्क, पथरीली ढलानों पर उगता है।
     - **पत्तियों की बनावट**: विपरीत दिशा में उगने वाली, हल्के अवतल आकार की पत्तियों की विशेषता।
     - **फूल**: हल्के पीले रंग की पंखुड़ियाँ होती हैं जिनके सिरों पर क्रीमी-सफेद रंग होता है।
     - **विशिष्ट लक्षण**: पुंकेसर तंतु पर ग्रंथि युक्त रोएँ होते हैं; साथ ही, इसकी जड़ें मोटी और मजबूत होती हैं, जो कठोर भू-भाग के लिए अनुकूलन को दर्शाती हैं।

- **खतरे**: इसमें **शहरी विस्तार**, **खनन गतिविधियाँ**, और **जलवायु परिवर्तन** शामिल हैं।
- इसे **सूक्ष्म स्थानिक (micro-endemic)** और **अत्यंत संकटग्रस्त (highly vulnerable)** माना जाता है, क्योंकि इसकी वितरण सीमा अत्यंत सीमित है और जनसंख्या भी बहुत कम है।
- वर्तमान में यह IUCN रेड लिस्ट मापदंडों के अंतर्गत **"डेटा अपर्याप्त (Data Deficient)"** श्रेणी में सूचीबद्ध है, क्योंकि इसकी जनसंख्या से संबंधित समग्र आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं।

3. **ऑब्सट्रक्टिव स्लीप एपनिया (Obstructive Sleep Apnoea)**: हाल ही में "नेचर कम्युनिकेशन्स" में प्रकाशित एक अंतरराष्ट्रीय अध्ययन में यह खुलासा हुआ है कि वैश्विक तापमान में वृद्धि ऑब्सट्रक्टिव स्लीप एपनिया (OSA) की **प्रचलनता और गंभीरता को काफी हद तक बढ़ा सकती है**।
   - अध्ययन चेतावनी देता है कि यदि जलवायु परिवर्तन पर नियंत्रण नहीं किया गया, तो यह सार्वजनिक स्वास्थ्य, अर्थव्यवस्था और समग्र कल्याण पर गंभीर प्रभाव डाल सकता है।

- **OSA के बारे में**: यह नींद से संबंधित सबसे सामान्य श्वसन विकारों में से एक है, जिससे वैश्विक स्तर पर लगभग **1 बिलियन लोग** प्रभावित हैं।
  - यह तब होता है जब नींद के दौरान गले की मांसपेशियाँ समय-समय पर शिथिल हो जाती हैं, जिससे वायुमार्ग अवरुद्ध हो जाता है और श्वास प्रक्रिया बाधित होती है।
  - इन स्थितियों के कारण रक्त में ऑक्सीजन की मात्रा कम हो जाती है और नींद बार-बार बाधित होती है, अक्सर व्यक्ति को पूरी तरह से पता भी नहीं चलता।
- **OSA से जुड़ी प्रमुख स्वास्थ्य समस्याएँ**:
  - **हृदय-वाहिकीय रोग**: उच्च रक्तचाप, दिल का दौरा और स्ट्रोक का खतरा बढ़ जाता है।
  - **चिंता और अवसाद**: लंबे समय तक नींद में व्यवधान मानसिक स्वास्थ्य स्थितियों को उत्पन्न या खराब कर सकता है।
  - **संज्ञानात्मक विकार**: यह डिमेंशिया, याददाश्त की हानि और पार्किंसन रोग जैसे जोखिमों को बढ़ता है।।
  - **जीवन की गुणवत्ता में कमी**: दिन में थकान, मूड में उतार-चढ़ाव और एकाग्रता में कमी।
- **AIIMS, नई दिल्ली द्वारा 2023 का एक अध्ययन**, जो "स्लीप मेडिसिन रिव्यूज़" में प्रकाशित हुआ, के अनुसार, भारत में **104 मिलियन (10.4 करोड़) कार्यशील आयु वर्ग** के लोग OSA से पीड़ित हैं, और इनमें से लगभग **50% लोगों में मध्यम से गंभीर स्तर तक** यह विकार पाया गया।

4. **शिपकी ला दर्रा**: हाल ही में, **शिपकी ला दर्रा**, जो तिब्बत के साथ भारत के ऐतिहासिक पर्वतीय व्यापार मार्गों में से एक है, को दशकों बाद **घरेलू पर्यटकों के लिए पुनः खोला गया** है, जहां पहले पहुंच प्रतिबंधित थी।
   - **शिपकी ला दर्रे के बारे में**: यह **हिमाचल प्रदेश के किन्नौर जिले** में स्थित है और इसकी ऊँचाई **3,930 मीटर** है। यह **भारत-चीन सीमा** पर स्थित है और दोनों देशों के बीच एक **महत्वपूर्ण सीमा चौकी** के रूप में कार्य करता है।
     - **भौगोलिक महत्त्व**: यह भारत के **सबसे ऊँचाई वाले मोटरेबल (वाहन योग्य) पर्वतीय दर्रों** में से एक है।
       - ✓ **सतलुज नदी**, जिसे तिब्बत में **लांगचेन ज़ांगबो** के नाम से जाना जाता है, इसी दर्रे से भारतीय क्षेत्र में प्रवेश करती है, जिससे इस दर्रे का भौगोलिक और सामरिक महत्व और भी बढ़ जाता है।
     - **ऐतिहासिक महत्त्व**: इसे **पेमा ला** या **साझा द्वार** के नाम से जाना जाता था, और यह दर्रा **भारत-तिब्बत के व्यापार और सांस्कृतिक आदान-प्रदान** का प्रतीक था, जो आधुनिक राष्ट्रीय सीमाओं की स्थापना से बहुत पहले अस्तित्व में था।
     - **रणनीतिक प्रासंगिकता**: **1962 के भारत-चीन युद्ध** के बाद, **शिपकी ला** को **वास्तविक नियंत्रण रेखा (LAC)** का हिस्सा घोषित किया गया।
       - ✓ बाद में इसे **भारत-तिब्बत सीमा पुलिस (ITBP)** द्वारा औपचारिक रूप से **शिपकी ला** नाम दिया गया, इसकी निरंतर रणनीतिक और सीमा प्रबंधन की महत्ता को ध्यान में रखते हुए।

5. **SIPRI रिपोर्ट**: हाल ही में **स्टॉकहोम इंटरनेशनल पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट (SIPRI)** ने अपनी **2025 की वार्षिक रिपोर्ट (Yearbook)** जारी की, जिसमें वैश्विक परमाणु हथियार भंडार में महत्वपूर्ण विकास को रेखांकित किया गया है।
   - एक प्रमुख निष्कर्ष यह है कि **भारत के पास अब पाकिस्तान की तुलना में अधिक परमाणु हथियार हैं**, जबकि **चीन का परमाणु भंडार तेज़ी से बढ़ रहा है**।
   - **SIPRI के बारे में**: यह एक स्वतंत्र अंतरराष्ट्रीय संस्थान है, जो संघर्ष, हथियारों, शस्त्र नियंत्रण और निरस्त्रीकरण पर अनुसंधान के लिए समर्पित है।
     - **स्थापना**: वर्ष **1966** में की गई थी।
     - **दृष्टिकोण (Vision)**: SIPRI एक ऐसे विश्व की कल्पना करता है जहाँ असुरक्षा के स्रोतों को पहचाना जाए, संघर्षों को रोका या हल किया जाए, और शांति स्थायी बनी रहे।

- **आंकड़ों और विश्लेषण की उपलब्धता**: SIPRI खुले स्रोतों से प्राप्त आंकड़ों, विश्लेषण और सिफारिशों के माध्यम से वैश्विक सुरक्षा प्रवृत्तियों पर मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।
- **लक्षित पाठकवर्ग**: SIPRI का अनुसंधान नीति-निर्माताओं, शोधकर्ताओं, मीडिया और सामान्य जनता को सेवा प्रदान करता है, जिससे वे सचेत निर्णय और सार्वजनिक विमर्श में योगदान कर सकें।

6. **बॉन जलवायु परिवर्तन सम्मेलन:** हाल ही में, वार्षिक बॉन जलवायु परिवर्तन सम्मेलन की शुरुआत संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन रूपरेखा सम्मेलन (UNFCCC) के अंतर्गत एक प्रमुख मध्य-वर्षीय शिखर सम्मेलन के रूप में हुई।
   - यह तकनीकी वार्ताओं और कार्यसूची निर्धारण के लिए एक महत्वपूर्ण मंच के रूप में कार्य करता है, जो ब्राज़ील में नवंबर 2025 में आयोजित होने वाले **COP30** से पहले आयोजित किया गया है।

- **बॉन जलवायु परिवर्तन सम्मेलन के बारे में:** इसे आधिकारिक रूप से **UNFCCC सहायक निकायों (SBs) के सत्र** के रूप में जाना जाता है।
  - यह **संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन रूपरेखा सम्मेलन (UNFCCC)** के अंतर्गत आयोजित दो प्रमुख वार्षिक शिखर सम्मेलनों में से एक है — दूसरा सम्मेलन **पार्टियों का सम्मेलन (COP)** होता है।
  - जहाँ **COP** का मुख्य फोकस उच्च-स्तरीय राजनीतिक वार्ताओं और प्रतिबद्धताओं पर होता है, वहीं **बॉन सम्मेलन** अधिक तकनीकी प्रकृति का होता है, जो **वैज्ञानिक, प्रक्रियात्मक और नीतिगत आधार** तैयार करता है जिससे COP निर्णयों को समर्थन मिले।
  - इसकी स्थापना **1992 में UNFCCC ढांचे के हिस्से के रूप में** की गई थी।
- **प्रमुख संस्थागत निकाय:**
  - **कार्यान्वयन हेतु सहायक निकाय (SBI):** इसका उद्देश्य जलवायु संबंधी निर्णयों के कार्यान्वयन की समीक्षा करना तथा तकनीकी और वित्तीय सहायता प्रदान करना है, विशेष रूप से विकासशील देशों के लिए।
  - **वैज्ञानिक एवं तकनीकी सलाह हेतु सहायक निकाय (SBSTA):** यह वैज्ञानिक अनुसंधान (मुख्यतः जलवायु परिवर्तन पर अंतर-सरकारी पैनल – IPCC से) और नीति-निर्माताओं के बीच एक सेतु का कार्य करता है, और जलवायु कार्रवाई पर साक्ष्य-आधारित निर्णयों का मार्गदर्शन करता है।

7. **समर्थ:** हाल ही में, दूरसंचार विकास केंद्र (C-DOT) ने आधिकारिक रूप से **'समर्थ' इनक्यूबेशन प्रोग्राम** लॉन्च किया — यह दूरसंचार और ICT (सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी) पारिस्थितिकी तंत्र में नवाचार और उद्यमिता को बढ़ावा देने हेतु एक प्रमुख पहल है।

- **समर्थ के बारे में:** इसे एक **व्यापक इनक्यूबेशन और त्वरक कार्यक्रम** के रूप में परिकल्पित किया गया है, जो आरंभिक चरण के स्टार्टअप्स को निम्नलिखित उभरते क्षेत्रों में सहायता प्रदान करता है:
  - ✓ **5G/6G और उभरती दूरसंचार तकनीकें**
  - ✓ **साइबर सुरक्षा और क्वांटम कंप्यूटिंग**
  - ✓ **कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और IoT अनुप्रयोग**
  - यह कार्यक्रम प्रति वर्ष **दो समूहों** में आयोजित किया जाता है, प्रत्येक छह माह की अवधि का होता है और कुल **36 स्टार्टअप्स** को समर्थन प्रदान करता है।
  - **कार्यान्वयन साझेदार:** भारत के सॉफ्टवेयर टेक्नोलॉजी पार्क्स (STPI) और TiE दिल्ली-NCR (द इंडस एंटरप्रेन्योर्स)
  - **हाइब्रिड प्रारूप में**, यह वित्तीय सहायता, विशेषज्ञ मार्गदर्शन, प्रयोगशाला अवसंरचना, निवेशक संपर्क और ऑफिस स्पेस प्रदान करता है, ताकि नवाचार को बाज़ार-योग्य समाधान में बदला जा सके।

8. **भारत की पवन ऊर्जा:** हाल ही में, **विश्व पवन दिवस 2025 (15 जून)** को भारत ने **51 गीगावॉट स्थापित पवन ऊर्जा क्षमता** को पार करते हुए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की और वैश्विक स्तर पर **चौथे सबसे बड़े पवन ऊर्जा बाजार** के रूप में अपनी स्थिति बनाए रखी।
   - हालांकि, **2030 तक 140 गीगावॉट** के महत्वाकांक्षी लक्ष्य को प्राप्त करना अब भी एक बड़ी चुनौती बना हुआ है, जिसका कारण है **निरंतर प्रणालीगत, बुनियादी ढांचे से जुड़ी, और नीतिगत बाधाएँ**।
   - **प्रमुख विशेषताएँ: सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले राज्य:**
     - ✓ **गुजरात:** 12,677 मेगावॉट (↑ 8.14%)
     - ✓ **तमिलनाडु:** 11,739 मेगावॉट (↑ 10.71%)
     - ✓ **कर्नाटक:** 7,351 मेगावॉट (↑ 22.13%) — **सबसे तीव्र वृद्धि**
   - **कम उपयोग की गई विनिर्माण क्षमता:** वर्ष 2024–25 में केवल **4.15 गीगावॉट** की पवन परियोजनाएं स्थापित की गईं, जबकि वार्षिक उत्पादन क्षमता **18 गीगावॉट** है।
   - **PLI योजना का अभाव:** पवन ऊर्जा घटक क्षेत्र के लिए **कोई उत्पादन आधारित प्रोत्साहन (PLI) योजना** उपलब्ध नहीं है।
   - **साइबर सुरक्षा संबंधी चिंताएँ:** चीन से आयातित उपकरणों के कारण **डेटा सुरक्षा और सिस्टम की संवेदनशीलता** को लेकर चिंताएँ बढ़ रही हैं।